'जापान का आधुनिकीकरण'

मेईजी पुनः स्थापना ने जापान के इतिहास में एक नये युग का सूत्रपात किया। शोगुन व्यवस्था की समाप्ति एवं सम्राट की शक्ति की पुनः स्थापना दोनों घटनायें साधारण ढंग से सम्पन्न हुई परन्तु इन दोनों घटनाओं ने जापान को एक नया जीवन प्रदान किया। जिससे वह कुछ ही वर्षों में एक आधुनिक राष्ट्र बन गया।

जापान के आधुनिकीकरण में सबसे बड़ी बाधा सामन्ती व्यवस्था थी। मेईजी पुनः स्थापना ने इस बाधा को दूर किया। पुनः स्थापना के बाद कुछ सामन्तों ने स्वेच्छा से तथा कुछ ने कानून के भय से अपने विशेषाधिकार त्याग दिये एवं अपनी जागीर राज्य को सौंप दी। इसका सीधा असर कृषि व्यवस्था पर पड़ा। सामन्त जैसे मध्यस्थ वर्ग के हट जाने से किसानों की स्थिति अच्छी हो गई। 1872 ई० में किसानों को अपने खेतों का स्वामित्व भी मिल गया। नये वातावरण में किसानों को राज्य की ओर से नई तकनीक एवं ऋण उपलब्ध कराये गये जिससे जापान में कृषि क्रांति आई। राज्य ने किसानों को और सहुलियतें देते हुए भूराजस्व को दर पहले 3% तय की और किसानों की परेशानियों को देखते हुये इसे ढाई प्रतिशत कर दिया। इन सबसे अधिशेष उत्पादन बढ़ा जिसने आधुनिकीकरण की राह को आसान बनाया।

जापान की सरकार ने सबसे अधिक ध्यान देश के औद्योगिक विकास पर दिया। पश्चिम के साथ सम्पर्क से उन्हें यह अनुभव हुआ कि जब तक वे पर्याप्त आर्थिक विकास नहीं कर लेते तब तक पाश्चात्य देशों का मुकाबला नहीं कर सकते। जापान ने यूरोप एवं अमेरिका से नये तकनीकों का आयात कर अपने यहाँ नये-नये कारखाने स्थापित किये। सरकार ने इस कार्य में गति प्रदान करने के लिए 1870 में उद्योग मंत्रालय स्थापित किये। प्रारंभ में सार्वजनिक क्षेत्र में कई कारखाने खुले लेकिन कालान्तर में कई औद्योगिक घराने सामने आये। इस

Scanned with CamScanner

तरह जापान में कपड़ा, रेशम, लोहा इस्पात, सिमेंट आदि प्रचुर मात्रा में तैयार होने लगे। 1910 तक जापान औद्योगिक क्षेत्र में इतनी उन्नति कर ली कि वह यूरोप के किसी भी पश्चिमी देश से इस क्षेत्र में मुकाबला कर सकता था।

औद्योगिकीकरण के पश्चात यातायात एवं संवादवहन के साधनों के विकास हेतु प्रयास किये गये। 1872 ई० में जापान में सर्वप्रथम रेल लाइन बिछायी गई तथा शीघ्र ही 1894 ई० तक सारे देश में रेल का जाल बिछ गया। इसके साथ ही जापान की सरकार ने संवादवहन के लिए डाक-तार विभाग का संगठन किया। 1868 ई० में टेलीग्राफ का पहली बार जापान में प्रवेश हुआ। रेलवे एवं डाक-तार के विस्तार के साथ-साथ जापानी सरकार ने नौवहन के क्षेत्र में विशेष ध्यान दिया। जापान में भाप से चलने वाले बड़े-बड़े समुद्री जहाजों का निर्माण होने लगा। 1870 ई० तक जापान में सौ-सौ टन के जहाज बनने लगे। इस तरह वह विश्व का एक प्रमुख नाविक शक्ति बन गया।

उद्योग धन्धों एवं व्यापार के विकास में बैंकों की भूमिका उल्लेखनीय होती है। अतएव जापान द्वारा बैंकों के विकास पर भी जोर दिया गया। 1873 ई० में जापान नेशनल बैंक की तथा 1885 ई० में बैंक ऑफ जापान की स्थापना हुई। 1890 तक तो जापान में बैंकों की संख्या 150 तक पहुँच गई।

प्रारंभिक मेइजी काल के सुधारों में एक महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा के क्षेत्र में हुआ। पश्चिम के नये संसार को जानने के लिये जापान में पहले से ही प्रबल उत्साह था। 1811 ई० में शोगुन शासन ने पश्चिमी ग्रंथों का जापानी अनुवाद करने के लिए बान्शो शिराबेशो नाम की संस्था बनायी जिसे 1857 ई० में एक विद्यालय का रूप दे दिया गया। जिसमें पश्चिमी भाषाओं एवं विद्याओं की शिक्षा दी जाती है। 1871 ई० में शिक्षा विभाग के गठन के कारण इसमें और गति आ गयी। सामन्ती

जापान में शिक्षा केवल उच्च वर्गों के लिये ही था लेकिन अब प्राथमिक शिक्षा सभी के लिये अनिवार्य कर दी गयी। प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा का आधार अमरीकी प्रारूप रहा। आगे पाश्चिमी आदर्शों पर कई विश्वविद्यालय जैसे टोकियो (1877) क्योतो, फुकुओमा तथा ओसाका आदि स्थापित किये गये। स्त्री शिक्षा पर जोर दिया गया परन्तु इसपर 1902 के बाद ज्यादा ध्यान दिया गया। सन् 1913 ई. में पहला महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन किये गये। अब चिकित्सा, इन्जिनियरिंग, विधि प्रबन्धन तथा विज्ञान की पढ़ाई पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा जिससे कुशल कार्यबल तैयार होने लगे। इन प्रयासों का फल ही आधुनिकीकरण के रूप में सामने आया।

जापान की सैनिक व्यवस्था सामन्ती प्रथा पर आधारित थी इसलिए सामन्ती व्यवस्था के अंत होने के कारण सेना के संगठन में परिवर्तन आवश्यक हो गया। अब तक जापानी सेना का निर्माण सामुराई लोगों द्वारा होता आया था। सामुराई लोग सामन्तों की सेवा में रहकर सैनिक सेवा प्रदान करते थे। सेना में प्रवेश इसी वर्ग तक सीमित था और जनसाधारण को सैनिक सेवा का अवसर नहीं दिया जाता था पर जब सामंती प्रथा का अंत हो गया तो सामुराई लोगों के इस एकाधिकार का भी अंत हो गया और जापान के सभी वर्गों के लिये सेना में भर्ती के लिये दरवाजा खोल दिया गया। अब कोई भी व्यक्ति जापानी सेना में भर्ती हो सकता था। इस तरह जापानी सेना का स्वरूप राष्ट्रीय हो गया।

1872 ई. में सेना के संगठन में एक दूसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। राजाज्ञा द्वारा जापान में सैनिक सेवा अनिवार्य कर दिया गया। जापान के नागरिकों के लिए सैनिक शिक्षा प्राप्त करना तथा निश्चित समय तक सैनिक जीवन व्यतीत करना अनिवार्य हो गया। जापान के राष्ट्रीय जीवन पर इसका दूरगामी प्रभाव पड़ा। इस तरह जापान में सैनिकवाद की उत्पत्ति हुई जो आधुनिकीकरण का प्रतिफल था।

मेइजी पुनः स्थापना के बाद जापान में राजनीतिक चेतना का विकास हुआ। जापानी सम्राट ने 1868 ई॰ में संसद स्थापना की घोषणा की थी। जिसकी मांग 1875 ई॰ के बाद और पकड़ने लगी। आवाज बुलंद करने के लिए कई संगठन स्थापित हुये। सुधार हेतु जापान में दोजीयूतो (उदारवादी दल) रीक्कन काइशिंतो (सांविधानिक सुधार दल) जैसे सुधारवादी दल का गठन हुआ। एक दूसरी धारा के दल जो सम्राट का समर्थक था 'रीक्कन तेईसेइतो (सांविधानिक साम्राज्यवादी दल) नाम के दल भी बने जो सुधारवादी दल का विरोधी था। इन दलों में आगे चलकर आरोप प्रत्यारोप का दौर चला जिसे रोकने के लिए सम्राट ने कई पग उठाये परंतु आगे सम्राट को सुधार करना पड़ा। इस संदर्भ में सम्राट ने संविधान निर्माण के लिए पहल की। सम्राट ने इस उद्देश्य से 3 मार्च 1882 को ईतो हीरोबूमी को पश्चिमी देशों के राज्य पद्धतियों का अध्ययन करने के लिए यूरोप भेजा। विभिन्न देशों के भ्रमण के बाद उसने इनोये कोवाशी, इतो मियोजी तथा कानेको केन्तारो की सहायता से 11 फरवरी 1889 को देश के लिये नये संविधान की घोषणा की। यह संविधान जर्मन संविधान से प्रेरित था क्योंकि इसमें लोकतंत्र एवं कुलीनतंत्र का सामंजस्य था।

इस संविधान द्वारा सम्राट के विशेषाधिकार बने रहे तथा उन्हें सलाह देने के लिये दो वैधानिक परामर्शदात्री समितियों का संगठन किया गया — मंत्रिपरिषद एवं प्रिवी कौंसिल था।

संविधान द्वारा दो सदनी संसद (डायट) का डायट की व्यवस्था की गई जिसमें उच्च सदन अमीर उमरा का था तथा निम्न सदन पन्द्रह येन या उससे अधिक कर देने वाले व्यक्तियों के निर्वाचित प्रतिनिधियों का था।

संविधान द्वारा नागरिकों को मौलिक अधिकार दिये गये। इसके अलावे फ्रांसीसी कानून के आधार पर दीवानी एवं फौजदारी कानून बनाये गये। चूँकि कानून पश्चिमी देशों के अनुरूप था अतएव उनकी आपत्ति समाप्त हो गयी एवं जापान

ने उनके राज्य क्षेत्रातीत अधिकार को समाप्त कर दिया। जापान शीघ्र ही अपने असमान सन्धियों को समाप्त कर सभी पश्चिमी शक्तियों से समानता के आधार पर सन्धि की।

इस तरह जापान मात्र दो तीन दशकों में एक आधुनिक शक्ति बन गया जो न केवल पाश्चात्य देशों को चुनौती दे सका वरन् चीन एवं रूस जैसी शक्तियों को भी पराजित कर सका। एक आधुनिक शक्ति के रूप में जापान का परिचय और भी स्पष्ट हो गया जब जापान ने पूर्वी एशिया में साम्राज्यवादी नीति अपनायी।

—०—